अर्थशास्त्र (MJ 1)

Akhilesh kumar singh
Ass. Prof. De. Of Eco.
GCPA College

अर्थशास्त्र का क्षेत्र बहुत व्यावहारिक और यथार्थवादी है। यह हमारे जीवन के अस्तित्व और वित्तीय पहलुओं से जुड़ा हुआ है। अर्थशास्त्र देश और उसके व्यक्तियों दोनों के लिए जीविका का निर्धारक है। अर्थव्यवस्था, कीमतों और मांगों में निरंतर परिवर्तन खपत और उत्पादन स्तरों को प्रभावित करता है। अर्थशास्त्र के माध्यम से, उन चरों को समझना आसान हो जाता है जो संभवतः अर्थव्यवस्था और देश की कुल आय को प्रभावित कर सकते हैं। आपूर्ति और मांग को अर्थशास्त्र के तहत निकटता से संबंधित के रूप में भी समझाया गया है। अर्थशास्त्र को मोटे तौर पर दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है – मैक्रोइकॉनॉमिक्स(समष्टि) और माइक्रोइकॉनॉमिक्स(व्यष्टि)। मैक्रोइकॉनॉमिक्स आम तौर पर पूरी अर्थव्यवस्था की जांच करता है। जबकि, माइक्रोइकॉनॉमिक्स व्यक्तिगत कारकों और चर से संबंधित है जो किसी विशेष घरेलू अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं। मैक्रोइकॉनॉमिक्स और माइक्रोइकॉनॉमिक्स दोनों अलग–अलग हैं, फिर भी एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। इसे नीचे दिए गए अनुभागों में स्पष्ट किया जाएगा। नीचे दिए गए अनुभागों में, अर्थशास्त्र की अवधारणाओं पर विस्तार होगा। इसे आगे अर्थशास्त्र की एक प्रमुख परिभाषा के माध्यम से समझा जाएगा। सूक्ष्मअर्थशास्त्र की अवधारणा और आपूर्ति और मांग जैसे चर के संबंध में विस्तार होगा।

अर्थशास्त्र की अवधारणा

अर्थशास्त्र को सामाजिक विज्ञान की एक शाखा के रूप में माना जाता है जो किसी देश, क्षेत्र या क्षेत्र के बाजार और अर्थव्यवस्था को समझने से संबंधित है। यह तीन मुख्य गतिविधियों की जांच करता है जो वस्तुओं और सेवाओं को घेरते हैं। ये हैं – उत्पादन, खपत और वितरण। उत्पादन प्रति वर्ष निर्मित और उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा है। उपभोग उन वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा है जो प्रति वर्ष जनसंख्या द्वारा उपयोग की जाती हैं। वितरण किसी देश के विभिन्न वर्गों के लिए वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता है।

अर्थशास्त्र वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में बदलाव के संबंध में उपभोक्ताओं के व्यवहार की पड़ताल करता है। यह पूर्व–निर्धारित करता है कि उपभोक्ता तर्कसंगत प्राणी हैं और प्रत्येक खपत से इष्टतम उपयोगिता या संतुष्टि प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह आगे पूरे बाजार स्थान को दो संस्थाओं – उपभोक्ताओं और उत्पादकों के बीच विभाजित करता है। उपभोक्ता, जैसा कि समझा जाता है, जनसंख्या का वह वर्ग है जो वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग करता है। इन वस्तुओं और सेवाओं के प्रदाताओं को उत्पादक कहा जाता है। इन दो कारकों के बीच एक सहज संचार है, और इस प्रकार, बाजार को मौजूद कहा जाता है।

अर्थशास्त्र संसाधनों के आवंटन का भी अध्ययन करता है। किसी देश में संसाधन दुर्लभ या प्रचुर मात्रा में हो सकते हैं। सरकार की आर्थिक नीतियों की योजना संसाधनों के उचित आवंटन में बनाई जानी चाहिए। दुर्लभ संसाधनों का आवंटन एक चुनौती के रूप में खड़ा है, क्योंकि वे सीमित हैं और रणनीतिक रूप से उपयोग किए जाने चाहिए।

अर्थशास्त्र आपूर्ति और मांग के बीच संबंध की पड़ताल करता है। आपूर्ति से तात्पर्य वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता से है। मांग विशेष वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने की इच्छा या इच्छा को संदर्भित करती है। यह उन कारकों का भी अध्ययन करता है जो आपूर्ति और मांग को प्रभावित करते हैं, जैसे जनसंख्या, डिस्पोजेबल आय, उत्पादन, और बहुत कुछ।

परिभाषा

अर्थशास्त्र को प्रमुख अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गई चार परिभाषाओं से समझा जा सकता है। अर्थशास्त्र की परिभाषा समाज और व्यक्तियों के संबंध में अर्थव्यवस्था को कैसे देखा जाता है, इसके विविध दृष्टिकोणों की व्याख्या करती है। अर्थशास्त्र की ये चार परिभाषाएँ निम्नवत हैः—

1. संपत्ति की परिभाषा एडम स्मिथ ने दी थी। इस परिभाषा के अनुसार, अर्थशास्त्र को धन का विज्ञान कहा जाता है, अर्थात धन को उन वस्तुओं और सेवाओं के रूप में परिभाषित किया है जो विनिमय में मूल्य पैदा करती हैं। इसमें वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात और आयात शामिल है, जो खपत और उत्पादन द्वारा इंगित किया जाता है। इसका अर्थ है कि अर्थशास्त्र का संबंध धन के सृजन से है।

2. अल्फ्रेड मार्शल के अनुसार, अर्थशास्त्र को समाप्त होने के साधन के रूप में परिभाषित किया गया है। ''अर्थशास्त्र जीवन के सामान्य व्यवसाय में मानव जाति का अध्ययन है। यह पूछताछ करता है कि वह अपनी आय कैसे प्राप्त करता है और वह इसका उपयोग कैसे करता है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक कार्रवाई के उस हिस्से की जांच करता है, जो प्राप्ति के साथ और कल्याण की भौतिक आवश्यकताओं के उपयोग के साथ सबसे अधिक निकटता से जुड़ा हुआ है। यह एक तरफ, धन का अध्ययन है और दूसरी तरफ और अधिक महत्वपूर्ण पक्ष मनुष्य के अध्ययन का एक हिस्सा है।''

3. अर्थशास्त्र की इस परिभाषा के अनुसार दुर्लभ संसाधनों का उचित आबंटन अर्थशास्त्र का मुख्य उद्देश्य है। यह परिभाषा मानव व्यवहार और संसाधनों के उपयोग के बीच संबंध का अध्ययन करती है जो आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दुर्लभ हैं।

4. पॉल सैमुएलसन के द्वारा दिया गया अर्थशास्त्र के परिभाषा को पिछली परिभाषाओं का पूर्ण समावेश माना जाता है। इसमें कहा गया है कि धन का उपयोग दुर्लभ

संसाधनों को नियोजित करने के लिए किया जाता है जिनका वैकल्पिक उपयोग हो सकता है। दुर्लभ संसाधनों से बनी वस्तुएं और सेवाएं उपयोग के लिए समाज में वितरित की जाती हैं।

अर्थशास्त्र को मोटे तौर पर इसके दो वर्गीकरणों के साथ समझा जा सकता है – समष्टि अर्थशास्त्र और सूक्ष्म अर्थशास्त्र। समष्टि अर्थशास्त्र पूरी अर्थव्यवस्था को सामान्यीकृत मानता है। यह उन आर्थिक कारकों का अध्ययन करता है जो किसी देश की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं। माइक्रोइकॉनॉमिक्स छोटे और आंशिक पहलुओं की जांच करता है जो व्यक्तिगत अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित कर सकते हैं। इसे आगे निम्नलिखित अनुभाग में विस्तृत किया गया है।

उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि–

व्यष्टि अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो संसाधनों के आवंटन, वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और वितरण में व्यक्तिगत व्यवहार का अध्ययन करती है। यह व्यक्तिगत आबादी के व्यक्तिगत क्षेत्रों, बाजारों, उद्यमों और अन्य आय स्रोतों का अध्ययन करता है। माइक्रोइकॉनॉमिक्स का फोकस अध्ययन करता है कि व्यक्तिगत प्रकार के बाजारों में आपूर्ति और मांग कैसे प्रभावित होती है। व्यष्टि अर्थशास्त्र बाजारों को इस प्रकार वर्गीकृत करता है – पूर्ण बाजार, एकाधिकार बाजार, अल्पाधिकार और अपूर्ण बाजार।

व्यष्टि अर्थशास्त्र अवसर लागत और उपयोगिता को समझता है। यह अध्ययन करता है कि अवसर लागत के लिए निर्णय कैसे लिया जाता है, अर्थात सर्वोत्तम मूल्य का चयन करने के लिए वैकल्पिक मूल्यों का नुकसान। उपयोगिता अधिकतमकरण को कुल और सीमांत उपयोगिता की अवधारणा के माध्यम से समझा जाता है। कुल उपयोगिता समग्र संतुष्टि है जो उपभोक्ता को इष्टतम खपत के बाद प्राप्त होती है। सीमांत उपयोगिता वह अतिरिक्त संतुष्टि है जो उपभोक्ता को एक अतिरिक्त इकाई का उपभोग करने पर प्राप्त होती है।

सूक्ष्मअर्थशास्त्र का मुख्य उद्देश्य यह पूछताछ करना है कि मूल्य में परिवर्तन, आपूर्ति में परिवर्तन, मांग, उपयोगिता और लागत के माध्यम से व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था कैसे प्रभावित होती है। ये छोटे कारक तब अर्थव्यवस्था पर समग्र प्रभाव को निर्धारित करते हैं, जिसे मैक्रोइकॉनॉमिक्स अध्ययन के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त खंड अर्थशास्त्र क्या है, इसकी विस्तृत समझ लेते हैं। यह किसी देश की अर्थव्यवस्था के लक्ष्य, प्रकृति और संबंध की जांच करता है। अर्थशास्त्र को अर्थशास्त्र की चार परिभाषाओं के माध्यम से आगे बढ़ाया गया है। ये परिभाषाएँ एडम स्मिथ, अल्फ्रेड मार्शल, लियोनेल रॉबिंस और पॉल सैमुएलसन द्वारा दी गई हैं।

अर्थशास्त्र की दो शाखाएँ हो सकती हैं – मैक्रोइकॉनॉमिक्स और माइक्रोइकॉनॉमिक्स। उपरोक्त जानकारी इन दो शाखाओं पर चर्चा करती है।